एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 06, अंक: 03 (मई-जून, 2026)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

मोटे अनाज से रची आत्मनिर्भरता की कहानी: पाँच देशों में निर्यात कर रहीं उत्पाद

डॉ. द्वारका[1], डॉ. कृतिका नायक[2], डॉ. सोनलकुमार गोवर्धन घुगल[3], शोभाराम ठाकुर[4], श्रध्दा परमार[5] एवं *निशा चढ़ार[6]

[1]अतिथि शिक्षक, कीटशास्त्र विभाग, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, कृषि महाविद्यालय, पन्ना, म.प्र.

[2]अतिथि शिक्षक, सस्यविज्ञान, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, कृषि महाविद्यालय, पन्ना, म. प्र.

[3]अतिथि शिक्षक, कीटशास्त्र विभाग, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, कृषि महाविद्यालय, पवारखेड़ा, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

[4]वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, एक्रिप परियोजना तिल फसल, कृषि महाविद्यालय, टीकमगढ़, मध्य प्रदेश

[5]पीएच.डी. शोधार्थी, कीटशास्त्र विभाग, राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर, म.प्र.

[6]एम.एससी. (बॉटनी), महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, शासकीय स्नातकोत्तर उत्कृष्ट महाविद्यालय, टीकमगढ़, मध्य प्रदेश

*संवादी लेखक का ईमेल पता: chadarnisha63@gmail.com

कभी सीमित संसाधनों में खेती करने वाली बैतूल जिले के बीजादेही क्षेत्र की महिलाओं ने आत्मनिर्भरता की मिसाल कायम की है, जो पूरे प्रदेश के लिए प्रेरणा बन गई है। करीब 200 महिलाओं के स्वयं सहायता समूह ने मिलेट्स क्रांति (मोटे अनाज) पर आधारित कंपनी शुरू की और कुछ ही वर्षों में सालाना टर्नओवर करीब 12 करोड़ रुपए तक पहुंच गया। उनके उत्पाद विदेशों तक जा रहे हैं। अब समूह से 2075 महिलाएं जुड़ गई हैं। महिलाओं के इस प्रयास ने न केवल महिला किसानों की आय बढ़ाई है, बल्कि ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने का रास्ता भी दिखाया है। महिला समूह की इस पहल से 850 परिवार श्रीअन्न की खेती से जुड़े हुए हैं। बीजादेही क्षेत्र में करीब 1200 एकड़ में कोदो, कुटकी, सांवा और रागी की खेती की जा रही है, जिससे लगभग 200 टन उत्पादन हो रहा है।

परिचय

भारत में महिलाओं की आत्मनिर्भरता, उद्यमिता और सामूहिक शक्ति का एक प्रेरणादायक उदाहरण उस समय सामने आया जब लगभग 200 महिलाओं ने पारंपरिक घरेलू सीमाओं से बाहर निकलकर "मिलेट्स क्रांति" की शुरुआत की और अपने सामूहिक प्रयासों से एक ऐसी कंपनी खड़ी कर दी जिसका सालाना टर्नओवर 12 करोड़ रुपए तक पहुंच गया। यह कहानी केवल आर्थिक सफलता की नहीं, बल्कि संघर्ष, आत्मविश्वास, नवाचार और सामाजिक परिवर्तन की भी कहानी है। जिन महिलाओं को कभी केवल घर और रसोई तक सीमित माना जाता था, उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि यदि अवसर, प्रशिक्षण और सही दिशा मिले, तो महिलाएं किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकती हैं। इन महिलाओं ने छोटे स्तर से शुरुआत करते हुए मोटे अनाज अर्थात् मिलेट्स आधारित उत्पादों का निर्माण प्रारंभ किया और धीरे–धीरे अपने कार्य को एक संगठित उद्यम का रूप दे दिया। आज उनका यह प्रयास न केवल उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बना रहा है, बल्कि समाज में महिलाओं की भूमिका और पहचान को भी नई दिशा दे रहा है। मिलेट्स, जिन्हें मोटा अनाज भी कहा जाता है, जैसे, बाजरा, ज्वार, रागी, कोदो, कुटकी और सांवा आदि, पारंपरिक भारतीय कृषि और भोजन संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा रहे हैं। समय के साथ आधुनिक खानपान और रासायनिक खेती के बढ़ते प्रभाव के कारण इन अनाजों

का उपयोग कम होने लगा था। किंतु स्वास्थ्य के प्रति बढ़ती जागरूकता तथा पौष्टिक भोजन की मांग ने एक बार फिर मिलेट्स को लोकप्रिय बना दिया। इन महिलाओं ने इसी अवसर को पहचाना और मिलेट्स आधारित खाद्य उत्पादों का निर्माण शुरू किया। उन्होंने आटा, बिस्किट, कुकीज, नमकीन, रेडी–टू–कुक मिश्रण, हेल्दी स्नैक्स तथा पारंपरिक व्यंजनों को आधुनिक पैकेजिंग और गुणवत्ता के साथ बाजार में प्रस्तुत किया। उनके उत्पाद स्वादिष्ट होने के साथ–साथ पौष्टिक भी थे, जिसके कारण उपभोक्ताओं के बीच उनकी मांग तेजी से बढ़ने लगी। इन महिलाओं की सफलता के पीछे सामूहिक संगठन और सहयोग की महत्वपूर्ण भूमिका रही। प्रारंभ में कई महिलाओं के पास पूंजी, तकनीकी ज्ञान और बाजार की जानकारी का अभाव था, लेकिन स्वयं सहायता समूहों, सरकारी योजनाओं, प्रशिक्षण कार्यक्रमों तथा स्थानीय संस्थाओं के सहयोग से उन्होंने अपने कौशल को विकसित किया। महिलाओं ने समूह बनाकर कार्य करना प्रारंभ किया, जिससे उत्पादन, पैकेजिंग और विपणन की प्रक्रिया अधिक व्यवस्थित हुई। धीरे–धीरे उनका यह छोटा प्रयास एक बड़े व्यावसायिक मॉडल में बदल गया। आज उनकी कंपनी में सैकड़ों परिवारों की आजीविका जुड़ी हुई है और अनेक ग्रामीण महिलाओं को रोजगार प्राप्त हो रहा है। इस "मिलेट्स क्रांति" का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण के रूप में सामने आया है। जो महिलाएं पहले केवल घरेलू कार्यों तक सीमित थीं, वे आज सफल उद्यमी, प्रबंधक और निर्णय लेने वाली नेतृत्वकर्ता बन चुकी हैं। उनकी आय में वृद्धि होने से परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है तथा बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार आया है। महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ा है और समाज में उनकी पहचान भी मजबूत हुई है। यह पहल ग्रामीण महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गई है, क्योंकि इससे यह संदेश मिलता है कि छोटे स्तर से शुरू किया गया कार्य भी बड़े बदलाव का आधार बन सकता है। यह पहल केवल आर्थिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि स्वास्थ्य और कृषि के क्षेत्र में भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। मिलेट्स पोषण से भरपूर होते हैं और इनमें प्रोटीन, फाइबर, आयरन, कैल्शियम तथा अन्य आवश्यक पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। ये मधुमेह, मोटापा और हृदय रोग जैसी समस्याओं को नियंत्रित करने में सहायक माने जाते हैं। इन महिलाओं ने लोगों को स्वस्थ भोजन के प्रति जागरूक करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके साथ ही मिलेट्स की खेती कम पानी में भी संभव होती है और यह जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को सहन करने में सक्षम होती है। इसलिए मिलेट्स आधारित उद्योग किसानों के लिए भी लाभकारी सिद्ध हो रहा है। किसानों को अपनी फसलों का बेहतर मूल्य मिलने लगा है और जैविक तथा टिकाऊ कृषि को भी बढ़ावा मिल रहा है।

12 करोड़ रुपए का सालाना टर्नओवर इस बात का प्रमाण है कि महिलाओं की मेहनत, नवाचार और सामूहिक शक्ति से बड़े आर्थिक परिवर्तन संभव हैं। यह उपलब्धि केवल एक व्यावसायिक सफलता नहीं, बल्कि ग्रामीण विकास, महिला सशक्तिकरण और आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इन महिलाओं ने यह सिद्ध कर दिया कि यदि दृढ़ संकल्प, मेहनत और सही मार्गदर्शन हो, तो साधारण परिस्थितियों से निकलकर भी असाधारण सफलता प्राप्त की जा सकती है। उनकी "मिलेट्स क्रांति" आज देशभर के लिए प्रेरणा बन चुकी है और यह संदेश देती है कि महिलाओं की भागीदारी के बिना ग्रामीण विकास और आर्थिक प्रगति की कल्पना अधूरी है।

प्रोसेसिंग यूनिट से बढ़ी पहचान

सतपुड़ा वेल फॉर्म प्रोड्यूसर कंपनी ग्रामीण महिला सशक्तिकरण, आत्मनिर्भरता और कृषि आधारित उद्यमिता का एक उत्कृष्ट उदाहरण बनकर उभरी है। कंपनी के संचालक प्रयास कासरे के अनुसार इस कंपनी की शुरुआत वर्ष 2020 में नाबार्ड के सहयोग से महिला स्वयं सहायता समूहों द्वारा की गई थी। प्रारंभिक दौर में यह पहल छोटे स्तर पर शुरू हुई थी, लेकिन महिलाओं की मेहनत, सामूहिक प्रयास और सही मार्गदर्शन के कारण यह धीरे–धीरे एक सफल कृषि–आधारित उद्योग के रूप में विकसित हो गई। इस पहल का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं को रोजगार उपलब्ध कराना, मोटे अनाज अर्थात् श्रीअन्न (मिलेट्स) को बढ़ावा देना तथा किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य दिलाना था।

महिला स्वयं सहायता समूहों ने मिलकर यह समझा कि पारंपरिक मोटे अनाजों में न केवल पोषण की दृष्टि से अपार संभावनाएं हैं, बल्कि इनके माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में बड़े स्तर पर रोजगार और आय के अवसर भी विकसित किए जा सकते हैं। इसी सोच के साथ महिलाओं ने मिलेट्स आधारित खाद्य उत्पाद तैयार करने का कार्य प्रारंभ किया। समय के साथ उनके उत्पादों की गुणवत्ता और लोकप्रियता बढ़ती गई। बढ़ती मांग को देखते हुए कंपनी ने अपने कार्य का विस्तार करने का निर्णय लिया। वर्ष 2024 में भारतीय स्टेट बैंक से लगभग 3.5 करोड़ रुपए का ऋण प्राप्त कर बीजादेही क्षेत्र में एक आधुनिक प्रोसेसिंग यूनिट स्थापित की गई। यह कदम कंपनी के विकास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ।

बीजादेही में स्थापित इस प्रोसेसिंग यूनिट ने ग्रामीण महिलाओं के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने का कार्य किया है। यूनिट में लगभग 20 महिलाओं को प्रत्यक्ष रोजगार प्राप्त हुआ है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है और वे आत्मनिर्भर बनने की दिशा में आगे बढ़ी हैं। पहले जो महिलाएं केवल घरेलू कार्यों तक सीमित थीं, वे आज खाद्य प्रसंस्करण, पैकेजिंग, गुणवत्ता नियंत्रण और विपणन जैसे कार्यों में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। इससे उनमें आत्मविश्वास बढ़ा है तथा समाज में उनकी पहचान भी मजबूत हुई है। यह पहल ग्रामीण महिला सशक्तिकरण का एक जीवंत उदाहरण बन गई है।

कंपनी द्वारा तैयार किए जा रहे उत्पाद आधुनिक उपभोक्ताओं की स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर विकसित किए गए हैं। श्रीअन्न से तैयार कुकीज, लड्डू, पास्ता, इडली, डोसा, उपमा मिक्स, इडली मिक्स, खिचड़ी मिक्स, मल्टी ग्रेन आटा, चिवड़ा और पापड़ जैसे उत्पाद पौष्टिक होने के साथ–साथ स्वादिष्ट भी हैं। मिलेट्स आधारित ये खाद्य पदार्थ फाइबर, प्रोटीन, आयरन, कैल्शियम तथा अन्य पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं, जिसके कारण स्वास्थ्य के प्रति जागरूक उपभोक्ताओं के बीच इनकी मांग तेजी से बढ़ रही है। आज के समय में लोग रासायनिक और अत्यधिक प्रोसेस्ड खाद्य पदार्थों से दूर होकर पारंपरिक एवं स्वास्थ्यवर्धक भोजन की ओर लौट रहे हैं, और कंपनी ने इसी बदलती मांग को एक अवसर के रूप में पहचाना।

इस कंपनी की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक यह है कि इसके उत्पाद अब अंतरराष्ट्रीय बाजार तक पहुंच चुके हैं। कंपनी के उत्पाद अमेरिका, यूएई, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा और थाईलैंड जैसे पांच देशों में निर्यात किए जा रहे हैं। यह उपलब्धि केवल कंपनी की व्यावसायिक सफलता का प्रतीक नहीं है, बल्कि यह भारत के पारंपरिक श्रीअन्न उत्पादों की वैश्विक पहचान को भी दर्शाती है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारतीय मिलेट्स उत्पादों की बढ़ती मांग यह सिद्ध करती है कि पारंपरिक भारतीय खाद्य पदार्थ विश्व स्तर पर भी अपनी विशेष पहचान बना सकते हैं। इससे स्थानीय किसानों और महिला समूहों को आर्थिक लाभ प्राप्त हो रहा है तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई मजबूती मिल रही है।

इस पहल का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि इससे स्थानीय किसानों को श्रीअन्न की खेती के लिए प्रोत्साहन मिला है। कंपनी को नियमित रूप से कच्चे माल की आवश्यकता होती है, जिसके कारण आसपास के किसान मिलेट्स की खेती की ओर आकर्षित हो रहे हैं। इससे किसानों को अपनी उपज का बेहतर मूल्य मिल रहा है और टिकाऊ कृषि को बढ़ावा मिल रहा है। मिलेट्स कम पानी में उगने वाली फसलें हैं और जलवायु परिवर्तन की परिस्थितियों में भी अच्छी उपज देती हैं, इसलिए यह पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हैं।

सतपुड़ा वेल फॉर्म प्रोड्यूसर कंपनी की यह सफलता यह दर्शाती है कि यदि महिलाओं को उचित अवसर, प्रशिक्षण और वित्तीय सहयोग मिले, तो वे ग्रामीण अर्थव्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकती हैं। यह मॉडल केवल एक व्यवसायिक उद्यम नहीं, बल्कि महिला सशक्तिकरण, ग्रामीण विकास, स्वास्थ्य जागरूकता और आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक प्रेरणादायक कदम है। कंपनी ने यह सिद्ध कर दिया है कि सामूहिक प्रयास, नवाचार और दृढ़ संकल्प के माध्यम से छोटे गांवों से निकलकर भी वैश्विक बाजार तक पहुंचा जा सकता है।

स्टार्टअप योजना में बनाया वेयर हाउस

जिला पंचायत की स्व सहायता समूह स्टार्टअप योजना ग्रामीण विकास, महिला सशक्तिकरण तथा कृषि आधारित उद्यमिता को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल के रूप में सामने आई है। इस योजना के अंतर्गत बीजादेही क्षेत्र में एक आधुनिक वेयर हाउस का निर्माण किया जा रहा है, जो स्थानीय किसानों तथा महिला स्वयं सहायता समूहों के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगा। यह वेयर हाउस विशेष रूप से श्रीअन्न अर्थात् मोटे अनाजों, जैसे कोदो–कुटकी, सांवा और रागी, के सुरक्षित भंडारण के उद्देश्य से विकसित किया जा रहा है। वर्तमान समय में किसानों के सामने सबसे बड़ी समस्याओं में से एक यह होती है कि उचित भंडारण व्यवस्था के अभाव में उनकी उपज खराब हो जाती है या उन्हें मजबूरी में कम कीमत पर फसल बेचनी पड़ती है। ऐसे में यह वेयर हाउस किसानों को अपनी उपज सुरक्षित रखने की सुविधा प्रदान करेगा, जिससे वे बेहतर बाजार मूल्य मिलने तक अपने उत्पादों का संरक्षण कर सकेंगे।

कोदो–कुटकी, सांवा और रागी जैसे श्रीअन्न पोषण से भरपूर फसलें हैं तथा इनकी मांग देश और विदेश दोनों स्तरों पर तेजी से बढ़ रही है। ये फसलें कम पानी में भी आसानी से उगाई जा सकती हैं और जलवायु परिवर्तन की परिस्थितियों में भी टिकाऊ मानी जाती हैं। इसलिए सरकार और विभिन्न संस्थाएं श्रीअन्न उत्पादन को बढ़ावा देने पर विशेष ध्यान दे रही हैं। बीजादेही में बनने वाला यह वेयर हाउस न केवल इन अनाजों की सुरक्षा सुनिश्चित करेगा, बल्कि किसानों को आर्थिक रूप से भी सशक्त बनाएगा। सुरक्षित भंडारण की सुविधा उपलब्ध होने से फसल की गुणवत्ता बनी रहेगी तथा किसानों को बाजार में बेहतर मूल्य प्राप्त होगा। इससे कृषि आधारित आय में वृद्धि होगी और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी।

इस परियोजना का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि वेयर हाउस के साथ–साथ वहीं पर प्रोसेसिंग, पैकिंग और ब्रांडिंग की आधुनिक व्यवस्था भी विकसित की जाएगी। सामान्यतः ग्रामीण क्षेत्रों में किसान केवल कच्चा उत्पाद बेचने तक सीमित रहते हैं, जिसके कारण उन्हें कम लाभ प्राप्त होता है। किंतु जब कृषि उत्पादों का प्रसंस्करण (प्रोसेसिंग), आकर्षक पैकेजिंग और ब्रांडिंग की जाती है, तो उनकी बाजार में मांग और मूल्य दोनों बढ़ जाते हैं। इस योजना के माध्यम से कोदो–कुटकी, रागी और सांवा जैसे श्रीअन्न से विभिन्न प्रकार के मूल्य संवर्धित उत्पाद तैयार किए जा सकेंगे, जैसे, आटा, कुकीज, लड्डू, हेल्दी स्नैक्स, रेडी–टू–कुक मिक्स आदि। इससे स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर बढ़ेंगे तथा महिला स्वयं सहायता समूहों को उद्यमिता के क्षेत्र में आगे बढ़ने का अवसर मिलेगा।

पैकिंग और ब्रांडिंग की सुविधा विकसित होने से स्थानीय उत्पादों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक पहुंचाने में भी सहायता मिलेगी। आज के प्रतिस्पर्धी बाजार में केवल गुणवत्तापूर्ण उत्पाद होना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनकी आकर्षक प्रस्तुति और पहचान भी अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। यदि ग्रामीण क्षेत्रों में तैयार उत्पादों को एक सशक्त ब्रांड के रूप में विकसित किया जाए, तो वे बड़े बाजारों में अपनी अलग पहचान बना सकते हैं। इस दिशा में यह योजना ग्रामीण उत्पादों को "लोकल से ग्लोबल" बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

महिला स्वयं सहायता समूहों के लिए यह योजना आत्मनिर्भरता और आर्थिक सशक्तिकरण का एक नया अवसर लेकर आई है। वेयर हाउस, प्रोसेसिंग यूनिट तथा पैकेजिंग कार्यों में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी से उन्हें स्थायी रोजगार और आय प्राप्त होगी। इससे ग्रामीण महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ेगा तथा वे केवल घरेलू कार्यों तक सीमित न रहकर आर्थिक गतिविधियों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेंगी। यह पहल ग्रामीण समाज में महिलाओं की स्थिति को मजबूत करने तथा उन्हें निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल करने की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान देगी।

इसके अतिरिक्त यह योजना कृषि क्षेत्र में टिकाऊ विकास को भी बढ़ावा देती है। श्रीअन्न आधारित कृषि पर्यावरण के लिए लाभकारी मानी जाती है, क्योंकि इन फसलों में रासायनिक उर्वरकों और अधिक सिंचाई की आवश्यकता कम होती है। इससे जल संरक्षण, मिट्टी की उर्वरता और पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में सहायता मिलती है। इस प्रकार बीजादेही में विकसित किया जा रहा यह वेयर हाउस केवल भंडारण की सुविधा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह किसानों की आय बढ़ाने, महिला सशक्तिकरण, ग्रामीण रोजगार, पोषण सुरक्षा और टिकाऊ कृषि विकास का एक व्यापक मॉडल बनकर उभर रहा है।

महिलाओं ने स्थापित किया आयाम

बीजादेही के स्वयं सहायता समूह की महिलाओं द्वारा सतपुड़ा वेल फॉर्म प्रोड्यूसर कंपनी में महिलाओं को रोजगार मिल रहा है। कंपनी का टर्नओवर करीब 12 करोड़ रुपए पहुंच गया है। अगस्त 2025 में कंपनी को स्टार्टअप योजना से 65 लाख रुपए की लागत से वेयर हाउस निर्माण की स्वीकृति दी गई है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह पहल ग्रामीण विकास, महिला सशक्तिकरण और श्रीअन्न आधारित कृषि को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। बीजादेही में निर्मित हो रहा वेयर हाउस किसानों को सुरक्षित भंडारण, बेहतर बाजार मूल्य तथा प्रोसेसिंग, पैकिंग और ब्रांडिंग जैसी सुविधाएं प्रदान करेगा। इससे न केवल स्थानीय उत्पादों की गुणवत्ता और पहचान बढ़ेगी, बल्कि महिला स्वयं सहायता समूहों को रोजगार एवं आत्मनिर्भरता के नए अवसर भी प्राप्त होंगे। यह मॉडल टिकाऊ कृषि, ग्रामीण उद्यमिता और आर्थिक सशक्तिकरण का एक प्रेरणादायक उदाहरण बनकर क्षेत्र के समग्र विकास में महत्वपूर्ण योगदान देगा। इसके अतिरिक्त यह पहल किसानों को पारंपरिक श्रीअन्न फसलों की ओर पुनः आकर्षित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। कोदो–कुटकी, रागी और सांवा जैसी फसलें कम पानी में उगाई जा सकती हैं तथा जलवायु परिवर्तन की परिस्थितियों में भी बेहतर उत्पादन देती हैं। इन फसलों के संरक्षण और मूल्य संवर्धन से किसानों की आय में वृद्धि होगी तथा पोषण सुरक्षा को भी बढ़ावा मिलेगा। आधुनिक प्रोसेसिंग और ब्रांडिंग व्यवस्था के कारण स्थानीय उत्पाद राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय बाजारों में अपनी अलग पहचान बना सकेंगे। यह परियोजना ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन और स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करने का भी प्रभावी माध्यम बनेगी। विशेष रूप से महिलाओं और युवाओं को प्रोसेसिंग, पैकेजिंग, विपणन और प्रबंधन जैसे कार्यों में भागीदारी का अवसर मिलेगा, जिससे उनमें आत्मविश्वास और आर्थिक स्वतंत्रता बढ़ेगी। सामूहिक प्रयास, सरकारी सहयोग और स्थानीय संसाधनों के उचित उपयोग से यह मॉडल अन्य क्षेत्रों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बन सकता है तथा आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को साकार करने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।